Sahaba Ki Baaten (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 250
Weekly Booklet : 250

सह़ाबा की बातें

सफ़ह़ात 24

माल रखने की महफ़ूज़ जगा 03
गोबर के कीड़े से भी कमतर 06
इब्लीस की आंखों की ठन्डक 08
3 हंसाने और 3 रुलाने वाली चीज़ें 21

पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या
(दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِکْمَتَکَ وَانْشُرْ
عَلَیْنَا رَحْمَتَکَ یَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِکْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : **सह़ाबा की बातें**

सिने त़बाअ़त : **1443** हि., **2022** ई.

ता'दाद : 000

नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "**सह़ाबा की बातें**"

मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, Email या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद–1, गुजरात।

MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج۵۱ص۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

सह़ाबा की बातें

दुआए अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 22 सफ़ह़ात का रिसाला : **"सह़ाबा की बातें"** पढ़ या सुन ले उसे अपनी, अपने प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और सह़ाबा व अहले बैत की सच्ची मह़ब्बत दे और उस से हमेशा हमेशा के लिये राज़ी हो जा। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** "जो मुझ पर जुमुआ़ के दिन और रात 100 मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़े, **अल्लाह** पाक उस की 100 ह़ाजतें पूरी फ़रमाएगा, 70 आख़िरत की और 30 दुन्या की और **अल्लाह** पाक एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर फ़रमा देगा जो उस दुरूदे पाक को मेरी क़ब्र में यूं पहुंचाएगा जैसे तुम्हें तह़ाइफ़ पेश किये जाते हैं, बिला शुबा मेरा इल्म मेरे विसाल के बा'द वैसा ही होगा जैसा मेरी ह़यात में है।"

(جمع الجوامع، 7/199، حدیث:22355)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

सह़ाबए किराम के अक़्वाल

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के फ़रामीन हमारे लिये ज़िन्दगी के कसीर शो'बाजात में राहनुमाई मुहय्या करते हैं क्यूं कि इन नुफ़ूसे क़ुदसिय्या की बातें उस इल्मी व अ़मली

तरबियत और सोह़बत का फ़ैज़ान हैं जो इन्हों ने प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से पाई, नीज़ इन के अक़्वाल सालहा साल के तजरिबात का निचोड़ होते हैं, आइये ! सह़ाबए किराम के कुछ इर्शादात पढ़ कर नसीह़त ह़ासिल करते हैं :

फ़रामीने ह़ज़रते अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ

❀ कोई गोरा हो या काला, आज़ाद हो या ग़ुलाम, अ़जमी हो या अ़रबी जिस के मुतअ़ल्लिक़ मुझे मा'लूम हो कि वोह तक़्वा व परहेज़ गारी में मुझ से बढ़ कर है तो मैं येह पसन्द करता हूं कि मैं उस की खाल का कोई ह़िस्सा होता । (کتاب الزھد لامام احمد، ص203، حدیث:1027)

❀ ह़ज़रते निमरान बिन मिख़्मर رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ से मरवी है कि ह़ज़रते अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने लश्कर के साथ चलते हुए फ़रमाया : ''सुनो ! बहुत से सफ़ेद लिबास वाले दीन के ए'तिबार से मैले होते हैं और बहुत से अपने आप को मुकर्रम समझने वाले ह़क़ीर होते हैं । ऐ लोगो ! नई नेकियां पुराने गुनाहों को मिटा देती हैं । अगर तुम में से किसी की बुराइयां ज़मीनो आस्मान को भर दें फिर वोह कोई नेकी करे तो हो सकता कि वोह एक नेकी उन तमाम गुनाहों पर ग़ालिब आ जाए और उन को मिटा दे ।'' (کتاب الزھد لامام احمد، ص203، حدیث:1026)

❀ ह़ज़रते ख़ालिद बिन मा'दान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ से मरवी है कि अमीने उम्मत ह़ज़रते अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया : ''मोमिन का दिल चिड़िया की त़रह़ दिन में कई बार उलट पलट होता है ।''

(مصنف ابن ابی شیبہ، 8/174، حدیث:5)

फ़रामीने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ

❀ لَاُلْفِیَنَّ اَحَدَکُمْ جِیْفَۃَ لَیْلٍ قُطُرُبَ نَھَارٍ या'नी मैं तुम में से किसी को हरगिज़ ऐसे शख़्स की त़रह़ न पाऊं जो रात भर बेजान लाशे की त़रह़ पड़ा रहता और दिन भर दुन्या कमाने के लिये भागदौड़ करता है (जब कि उसे आख़िरत की बिल्कुल फ़िक्र नहीं होती)। (مُعجم کبیر، 9/152، حدیث:8763)

❀ मुझे ऐसे शख़्स से सख़्त नफ़रत है जो न तो दुन्या के किसी काम में मगन हो और न ही उसे आख़िरत की कुछ फ़िक्र हो।

(حلیۃ الاولیاء، 1/178، حدیث:403)

❀ तुम में से हर एक मेहमान है और मेहमान हमेशा नहीं रहता उसे रुख़्सत होना पड़ता है और तुम्हारे पास जो माल है येह उधार है और उधार उस के मालिक को लौटाना होता है। (مُعجم کبیر، 9/101، حدیث:8533)

❀ रियाकार मरने के बा'द भी रिया नहीं छोड़ता। किसी ने पूछा : वोह कैसे ? फ़रमाया : वोह चाहता है कि मेरे जनाज़े में बहुत सारे लोग हों ताकि मेरी इ़ज़्ज़त (वाह वा) हो, रिया मरने के बा'द भी पीछा नहीं छोड़ती।

(मिरआतुल मनाजीह़, 7/19)

❀ जिस से हो सके वोह अपना माल वहां रखे जहां उसे कीड़ा लगे न चोर का हाथ, (या'नी राहे ख़ुदा में सदक़ा कर दे) क्यूं कि बन्दे का दिल माल की त़रफ़ मुतवज्जेह रहता है। (حلیۃ الاولیاء، 1/183، حدیث:433)

❀ सच भारी और तल्ख़ लगता है जब कि झूट हलका व शीरीं महसूस होता है और कभी थोड़ी सी शह्वत त़वील ग़म का सबब बन जाती है।

(الزھد لابن مبارک، ص98، حدیث:290)

❀ उस ज़ात की क़सम जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं ! रूए ज़मीन पर

ज़बान से बढ़ कर कोई चीज़ ऐसी नहीं जिसे त़वील मुद्दत क़ैद में रखने की ज़ियादा ह़ाजत हो। (معجم کبیر، 9/149، حدیث:8744)

❀ दिल में अच्छी ख़्वाहिशात भी पैदा होती हैं और बुरे ख़यालात भी जनम लेते हैं। लिहाज़ा नेकी को ग़नीमत जान कर उसे कर लो और बुराई से अपना दामन दाग़दार न करो बल्कि उसे तर्क कर दो।

(کتاب الزھد لامام احمد، ص469، حدیث:1331 مفہوماً)

❀ दिल को सख़्त कर देने वाली अश्या से बचो और जो चीज़ दिल में खटके उसे छोड़ दो। (الورع لامام احمد بن حنبل، ص46)

❀ ह़ाफ़िज़े क़ुरआन को चाहिये कि जब लोग सो रहे हों तो वोह अपनी रात की ह़िफ़ाज़त करे (कि उस में जाग कर क़ुरआने मजीद की तिलावत और **अल्लाह** पाक की इबादत करे, हरगिज़ उसे ग़फ़्लत में न गुज़ारे)। जब लोग खा पी रहे हों तो वोह अपने दिन का ख़याल (या'नी रोज़ा) रखे। जब लोग ख़ुश हो रहे हों तो वोह अपने ग़म को याद करे (या'नी फ़िक्रे आख़िरत करे)। जब लोग हंस रहे हों तो वोह आंसू बहाए। जब लोग बाहम मिलजुल रहे हों तो वोह ख़ामोश रहे और जब लोग तकब्बुर का शिकार हों तो वोह ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ इख़्तियार करे। नीज़ ह़ाफ़िज़े क़ुरआन को चाहिये कि वोह रोने वाला, ग़मज़दा, ह़िक्मत व बुर्दबारी, इ़ल्म व इ़त्मीनान वाला हो। और उसे चाहिये कि वोह ख़ुश्क रू, ग़ाफ़िल, शोर मचाने वाला, चीख़ो पुकार करने वाला न हो और न ही सख़्त मिज़ाज हो।

(کتاب الزھد لامام احمد، ص183، حدیث:892)

❀ ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन ह़जीरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ जब लोगों के पास

बैठते तो फ़रमाते : "ऐ लोगो ! शबो रोज़ गुज़रने के साथ साथ तुम्हारी उ़म्रें भी कम होती जा रही हैं। तुम्हारे आ'माल लिखे जा रहे हैं। मौत अचानक आएगी। पस जो नेकी की फ़स्ल बोएगा जल्द ही उसे शौक़ से काटेगा और जो बुराई की खेती बोएगा उसे नदामत के साथ काटना पड़ेगा। हर एक अपनी ही उगाई हुई खेती काटेगा। सुस्ती व काहिली करने वाला अपने अ़मल के ज़रीए़ आगे कभी नहीं बढ़ पाएगा और ह़िर्स व लालच में मुब्तला सिर्फ़ अपना मुक़द्दर ही ह़ासिल कर पाएगा। जिसे भी भलाई की तौफ़ीक़ मिली वोह **अल्लाह** पाक ही की त़रफ़ से है और जिसे बुराई से बचाया गया तो वोह भी **अल्लाह** पाक ही के करम से है। मुत्तक़ी व परहेज़ गार आ़म लोगों के सरदार और फ़ुक़हा, रहनुमा हैं।" उन की सोह़बत इख़्तियार करना नेकियों में इज़ाफ़े का सबब है।

(کتاب الزھد لامام احمد، ص183، حدیث:889)

❀ एक शख़्स ने इन के पास आ कर कहा : "ऐ अबू अ़ब्दुर्रह़मान (येह ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द की कुन्यत है) मुझे जामेअ़ व नाफ़ेअ़ कलिमात सिखाइये !" फ़रमाया : **अल्लाह** पाक की इ़बादत करो। उस के साथ किसी को शरीक न ठहराओ। क़ुरआने मजीद के अह़कामात के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी बसर करो। अगर तुम्हारे पास कोई ना वाक़िफ़ व ना पसन्द शख़्स भी ह़क़ बात लाए तो उसे क़बूल कर लो और कोई तुम्हारा प्यारा व पसन्दीदा शख़्स भी नाह़क़ बात पेश करे तो उसे रद कर दो।

(موسوعۃ لابن ابی الدنیا، 7/264، حدیث:454 مفہوماً)

❀ ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की ख़िदमत में कुछ किसान ह़ाज़िर हुए तो उन की मोटी गरदनें और सिह़्ह़त मन्द व तुवाना बदन देख कर लोगों को तअ़ज्जुब हुवा (इस पर) आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया : "तुम

देखते हो काफ़िरों के जिस्म सिह्ह़त मन्द हैं लेकिन दिल बीमार हैं और मोमिन का जिस्म अगर्चे कमज़ोर हो लेकिन उस का दिल सिह्ह़त मन्द व मज़बूत़ होता है। **अल्लाह** पाक की क़सम ! अगर तुम्हारे जिस्म सिह्ह़त मन्द हों मगर दिल मरीज़ तो तुम्हारी है़सिय्यत **अल्लाह** पाक के नज़्दीक गुबरीला (या'नी गोबर के कीड़े) से भी कमतर है।"

(کتاب الزھد لامام احمد، ص148، حدیث:904 مفہوماً)

❀ ह़ज़रते इतरीस बिन उ़रकूब शैबानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه के पास ह़ाज़िर हुए और कहा : "हलाक हुवा वोह शख़्स जिस ने न तो नेकी का हुक्म दिया और न ही बुराई से मन्अ़ किया।" तो ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने फ़रमाया : बल्कि हलाक तो वोह हुवा जिस का दिल भलाई को भलाई और बुराई को बुराई नहीं समझता। (معجم کبیر، 9/107، حدیث:8564)

❀ सालिह़ीन दुन्या से रुख़्सत हो गए और शक करने वाले बाक़ी रह गए जिन्हें नेकी की पहचान है न बुराई का पता। (معجم کبیر، 9/105، حدیث:8552)

❀ एक शख़्स ने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه की ख़िदमत में अ़र्ज़ की : ऐ अबू अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ! मुझे कोई नसीह़त फ़रमाइये ! आप رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने फ़रमाया : तेरा घर तुझे किफ़ायत करे (या'नी बिला ज़रूरत घर से न निकलो) ज़बान की ह़िफ़ाज़त करो और अपनी ख़त़ाओं को याद कर के आंसू बहाओ। (کتاب الزھد لامام احمد، ص42، حدیث:130)

❀ "(ऐ लोगो !) तुम नमाज़, रोज़ा और इज्तिहाद में सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से बढ़ना चाहते हो (याद रखो ! ऐसा नहीं हो सकता क्यूं कि) वोह तुम से बेहतर हैं।" लोगों ने अ़र्ज़ की : "ऐ अबू अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه !

इस की क्या वज्ह है ?'' फ़रमाया : वोह दुन्या में सब से ज़ियादा ज़ोह्द इख़्तियार करते और आख़िरत में सब से बढ़ कर रग़बत रखते हैं।

(حلیۃ الاولیاء، 1/185، حدیث:438)

❀ दिल बरतनों की त़रह़ हैं, लिहाज़ा इन्हें क़ुरआने पाक के इ़लावा किसी और चीज़ से न भरो। (کتاب الزھد للامام احمد، ص183، حدیث:891)

❀ किसी शख़्स के गुनहगार होने के लिये इतना ही काफ़ी है कि जब उस से कहा जाए : **अल्लाह** से डरो, तो वोह नाराज़ होते हुए कहे : अपने काम से काम रखो। (الکواکب الدریۃ، 1/171)

❀ आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाया करते : ऐ ज़बान ! अच्छी बात कर फ़ाएदे में रहेगी और बोल मत कि नदामत (शरमिन्दगी) से पहले सलामत रहेगी।

(حسن السمت فی الصمت، ص79)

❀ حَافِظُوا عَلٰی اَبْنَائِکُمْ فِی الصَّلٰوۃِ या'नी नमाज़ के मुआ़मले में अपने बच्चों पर तवज्जोह दो। (مصنف عبد الرزاق، 4/120، رقم:7329)

❀ ताजिर पर तअ़ज्जुब है वोह कैसे सलामत रह सकता है, अगर अपनी चीज़ बेचता है तो उस की ता'रीफ़ें करता है और अगर दूसरे से कोई चीज़ ख़रीदता है तो उस की बुराइयां करता है। (بہجۃ المجالس وانس المجالس لابن عبد البر، 1/136)

❀ मैं किसी अंगारे को ज़बान से चाटूं और वोह जला दे जो जला दे और बाक़ी रहने दे जो बाक़ी रहने दे, येह मेरे नज़्दीक इस से ज़ियादा पसन्दीदा है कि जो काम हो चुका उस के बारे में कहूं : काश ! न होता या न होने वाले काम के बारे में कहूं : काश ! हो जाता। (احیاء العلوم، 5/66)

❀ जब कोई शराबी मर जाए तो उसे दफ़्न कर दो, इस के बा'द मुझे एक लकड़ी पर लटका कर उस की क़ब्र खोदो, अगर उस का चेहरा क़िब्ले से फिरा हुवा न पाओ तो मुझे यूंही लटक्ता छोड़ देना। (کتاب الکبائر للذھبی، ص۹۶)

❀ जब तक तुम नमाज़ में मश्ग़ूल रहते हो तो बादशाह (या'नी **अल्लाह** पाक की रह़मत) का दरवाज़ा खटखटाते रहते हो और जो बादशाह का दरवाज़ा खटखटाता रहता है उस के लिये दरवाज़ा खोल ही दिया जाता है। (مصنف ابن ابی شیبہ، 2/360، حدیث:10)

❀ (किसी की) ता'रीफ़ या बुराई करने में जल्दी न करो क्यूं कि आज तुझे अच्छे लगने वाले कल बुरे और आज बुरे लगने वाले कल अच्छे लगेंगे। (حلیۃ الاولیاء، 4/279، حدیث:5568)

फ़रामीने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا

❀ ह़ज़रते सईद बिन जुबैर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ फ़रमाते हैं कि मैं ने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا को देखा कि आप अपनी ज़बान की नोक हाथ से पकड़ कर फ़रमा रहे हैं : "तुझ पर अफ़्सोस है ! अच्छी बात कह कि इसी में तेरा फ़ाएदा है और बुरी बात से ख़ामोश रह कि इसी में तेरी सलामती है।" देखने वाले ने इस की वज्ह दरयाफ़्त की तो फ़रमाया : "मुझे ख़बर मिली है कि क़ियामत के दिन आदमी अपनी ज़बान की वज्ह से सब से ज़ियादा ख़सारा उठाएगा।" (کتاب الزھد للامام احمد، ص206، حدیث:1047)

❀ ऐ ज़बान ! अच्छी बात कह, तुझे फ़ाएदा होगा और बुरी बात कहने से ख़ामोश रह सलामती में रहेगी। (حسن السمت فی الصمت، ص80)

❀ जब दिरहमो दीनार बनाए गए तो इब्लीस ने उन्हें पकड़ कर अपनी आंखों से लगाया और कहा : "तुम मेरे दिल की ग़िज़ा और आंखों की ठन्डक हो। मैं तुम्हारे ज़रीए लोगों को सरकश व काफ़िर बनाऊंगा और तुम्हारी वज्ह से मैं लोगों को जहन्नम में दाख़िल कराऊंगा। मैं उस आदमी से ख़ुश हूं जो दुन्या की मह़ब्बत में मुब्तला हो कर तुम्हारी ग़ुलामी करने लगे।" (صفۃ الصفوۃ، 1/384، الرقم:119)

❀ जिस क़ौम में भी ज़ुल्म ज़ाहिर होता है उस में कसरत से अम्वात वाक़ेअ़ होती हैं। (التمہید لابن عبد البر، 10/262، تحت الحدیث:755)

❀ ह़ज़रते अबू ग़ालिब ख़लजी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ बयान करते हैं : मैं ने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا को फ़रमाते हुए सुना : "तुम फ़राइज़ की अदाएगी अपने ऊपर लाज़िम कर लो और **अल्लाह** पाक ने तुम पर जो अपने हुक़ूक़ मुक़र्रर फ़रमाए हैं उन्हें अदा करो और इस पर उसी से मदद त़लब करो क्यूं कि वोह परवर्दगार जब किसी बन्दे में सिद्क़े निय्यत और सवाब की त़लब देखता है तो उस की तकालीफ़ दूर फ़रमा देता है और वोह मालिक है जो चाहता है करता है।"

(حلیۃ الاولیاء، 1/401، حدیث:1151)

❀ बिला शुबा **अल्लाह** पाक ने हर मोमिन व फ़ासिक़ का रिज़्क़ लिख दिया है। पस अगर वोह रिज़्क़े ह़लाल मिलने तक सब्र करे तो **अल्लाह** पाक उसे अ़त़ा फ़रमाता है और अगर बे सब्री से काम ले और ह़राम की त़रफ़ क़दम बढ़ाए तो **अल्लाह** पाक उस के रिज़्क़े ह़लाल में कमी फ़रमा देता है। (حلیۃ الاولیاء، 1/401، حدیث:1152)

❀ اَیْقِظُوا الصَّبِیَّ یُصَلِّ، وَلَوْ بِسَجْدَۃٍ या'नी बच्चे को नमाज़ के लिये बेदार करो अगर्चे एक ही सज्दा कर लें। (مصنف عبد الرزاق، 4/120، رقم:7329)

❀ बरोज़े क़ियामत सब से पहले उन लोगों को जन्नत की त़रफ़ बुलाया जाएगा जो हर ह़ाल में **अल्लाह** पाक का शुक्र करते हैं।

(کتاب الزھد لابن مبارک، ص68، حدیث:206)

❀ जन्नत की ज़मीन के वारिस वोह लोग हैं जो पांचों नमाज़ें बा जमाअ़त अदा करते हैं। (حسن التنبہ، 3/209)

फ़रामीने ह़ज़रत इमामे ह़सन मुज्तबा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ

❀ सब से बड़ी अ़क़्ल मन्दी परहेज़ गारी और सब से बड़ी बे वुक़ूफ़ी फ़िस्क़ो फ़ुजूर (या'नी गुनाह व ना फ़रमानी) है। (مصنف ابن ابی شیبہ، 7/277، حدیث:165)

❀ ऐ इब्ने आदम! अपने भाई से ह़सद न कर क्यूं कि अगर **अल्लाह** पाक ने उस की तक्रीम के लिये वोह ने'मत उसे अ़त़ा फ़रमाई है तो जिसे **अल्लाह** पाक इ़ज़्ज़त दे उस से ह़सद न करो और अगर किसी और वज्ह से अ़त़ा फ़रमाई है तो उस से ह़सद क्यूं करते हो जिस का ठिकाना जहन्नम है। (الزواجر عن اقتراف الکبائر، 1/116)

❀ आदमी पर तअ़ज्जुब है कि वोह रोज़ाना एक या दो मरतबा अपने हाथ से नापाकी धोता है फिर भी ज़मीनो आस्मान के बादशाह से मुक़ाबला (तकब्बुर) करता है। (الزواجر عن اقتراف الکبائر، 1/149)

❀ ह़ज़रत इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ ने एक अमीर को मुतकब्बिराना चाल चलते हुए देखा तो उस से फ़रमाया कि ऐ अह़मक़! तकब्बुर से इतराते हुए नाक चढ़ा कर कहां देख रहा है? क्या उन ने'मतों को देख रहा है जिन का शुक्र अदा नहीं किया गया या उन ने'मतों को देख रहा है कि जिन का तज़्किरा **अल्लाह** पाक के अह़काम में नहीं। जब उस ने येह बात सुनी तो उ़ज़्र पेश करने ह़ाज़िर हुवा। आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ ने इर्शाद फ़रमाया : मुझ से मा'ज़िरत न कर बल्कि **अल्लाह** पाक की बारगाह में तौबा कर, क्या तुम ने **अल्लाह** पाक का येह फ़रमान नहीं सुना :

﴿وَ لَا تَمْشِ فِی الْاَرْضِ مَرَحًا ۚ اِنَّكَ لَنْ تَخْرِقَ الْاَرْضَ وَ لَنْ تَبْلُغَ الْجِبَالَ طُوْلًا ۝﴾ (پ15، بنی اسرائیل:37)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और ज़मीन में इतराता न चल बेशक तू हरगिज़ ज़मीन न चीर डालेगा और हरगिज़ बुलन्दी में पहाड़ों को न पहुंचेगा।

(الزواجر عن اقتراف الکبائر، 1/149)

फ़रामीने ह़ज़रत इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ

❀ ऐ लोगो ! अच्छे अख़्लाक़ में रग़बत करो, नेक आ'माल में जल्दी करो, जिस ने किसी पर एह़सान किया हो और वोह उस का शुक्र अदा न करे तो एह़सान करने वाले को **अल्लाह** पाक इ़वज़ अ़ता फ़रमाता है। यक़ीन करो नेक काम में ता'रीफ़ होती है और सवाब मिलता है, अगर तुम नेकी को किसी मर्द की सूरत में देख सकते तो उसे बहुत ह़सीनो जमील देखते जो देखने वाले को भला लगता और अगर तुम मलामत और बदी को देख सकते तो बद तरीन मन्ज़र देखते जिस से दिल नफ़्रत करते और नज़रें नीची हो जाती हैं। ऐ लोगो ! जो सख़ावत करता है वोह सरदार होता है और जो बुख़्ल करता है वोह ज़लीलो रुस्वा होता है। ज़ियादा सख़ी वोह शख़्स है जो उस शख़्स पर सख़ावत करे जिसे इस की उम्मीद न हो। ज़ियादा पाक दामन और बहादुर वोह शख़्स है जो बदला लेने पर क़ादिर होने के बा वुजूद मुआ़फ़ कर दे, ज़ियादा सिलए रेह़मी करने वाला शख़्स वोह है जो क़त़्अ़ तअ़ल्लुक़ करने वाले रिश्तेदारों से तअ़ल्लुक़ जोड़े। जो शख़्स अपने भाई पर एह़सान कर के **अल्लाह** पाक की रिज़ा चाहे **अल्लाह** पाक मुश्किल वक़्त में उस का बदला देता है और उस से सख़्त मुसीबत टाल देता है। जिस शख़्स ने अपने मुसल्मान भाई से दुन्यवी मुसीबत दूर की **अल्लाह** पाक उस से उख़्रवी मुसीबत दूर करता है और जो किसी पर एह़सान करे **अल्लाह** करीम उस पर एह़सान फ़रमाता है और एह़सान करने वाले **अल्लाह** के प्यारे हैं। ❀ अगर्चे दुन्या अच्छी और नफ़ीस समझी जाती है मगर **अल्लाह** का सवाब बहुत ज़ियादा और नफ़ीस है। ❀ रिज़्क़ तक़्दीर में तक़्सीम हो चुके हैं लिहाज़ा कस्ब में इन्सान

का ह़िर्स न करना अच्छा है। ❀ माल दुन्या में छोड़ कर ही जाना है तो फिर इन्सान माल में बुख़्ल क्यूं करता है? ❀ जब अज़िय्यत देने के लिये कोई शख़्स किसी से मदद चाहे तो उस की मदद करने वाले और ज़लीलो रुस्वा लोग सब बराबर हैं। (نورالابصار فی مناقب آل بیت النبی المختار، ص152، 153)

फ़रामीने उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا

❀ जो बन्दा ख़ालिस पानी पिये और वोह बिग़ैर तक्लीफ़ के (पेट में) दाख़िल हो और बिग़ैर तक्लीफ़ के बाहर भी निकल आए तो उस पर शुक्र लाज़िम है। (کتاب الشکر، ص162، رقم:188)

❀ तुम लोग अफ़्ज़ल इबादत या'नी आजिज़ी से ग़ाफ़िल हो। (احیاء العلوم، 3/419)

फ़रामीने ह़ज़रत अमीरे मुआविया رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ

❀ जो मेरी किसी ने'मत से ह़सद करता है मैं उस के सिवा हर शख़्स को राज़ी कर सकता हूं क्यूं कि ह़ासिद उसी वक़्त राज़ी होगा जब वोह ने'मत मुझ से ज़ाइल हो जाएगी। (احیاء العلوم، 3/233)

❀ सब से बड़ा सरदार वोह शख़्स है कि जब उस से कुछ मांगा जाए तो सब से बढ़ कर सख़ावत करने वाला हो, मह़ाफ़िल में हुस्ने अख़्लाक़ के ए'तिबार से सब से अच्छा हो और उस के साथ बुरा सुलूक किया जाए तो ह़िल्म व बुर्दबारी का मुज़ाहरा करे। (تاریخ ابن عساکر، 59/186، رقم:7510)

❀ जो आदमी तजरिबात से फ़ाएदा न उठाए वोह बुलन्द मक़ाम ह़ासिल नहीं कर सकता। (احیاء العلوم، 3/230)

फ़रामीने ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ

❀ अगर आदमी के कानों में पिघला हुवा सीसा डाल दिया जाए तो येह

उस के लिये अज़ान सुन कर मस्जिद में ह़ाज़िर न होने से ज़ियादा बेहतर हैं। (مصنف ابن ابی شیبہ، 1/380، حدیث:4)

❀ जिन घरों में **अल्लाह** पाक का ज़िक्र होता है अहले आस्मान उन घरों को ऐसे देखते हैं जैसे तुम सितारों को देखते हो। (مصنف ابن ابی شیبہ، 8/236، حدیث:10)

❀ ह़ज़रते अ़त़ा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से रिवायत है कि ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ عَنْه ने फ़रमाया : "जब तुम 6 चीज़ें देख लो तो अगर तुम्हारी जान तुम्हारे क़ब्ज़े में हो तो उसे छोड़ दो। इसी वज्ह से मैं मौत की तमन्ना करता हूं इस ख़ौफ़ से कि कहीं इन चीज़ों का ज़माना न पा लूं। जब बे वुक़ूफ़ ह़ुक्मरान हों। फ़ैसले बिकने लगें। जानें मह़फ़ूज़ न रहें। रिश्ते काटे जाएं। क़ौम के मुह़ाफ़िज़ क़ौम के लुटेरे बन जाएं और लोग क़ुरआने मजीद गा कर पढ़ने लगें।" (تاریخ ابن عساکر، 67/379۔ مصنف عبد الرزاق، 2/322، حدیث:1119)

❀ ह़ज़रते अबू अस्वद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से रिवायत है कि एक शख़्स ने मदीनए त़य्यिबा में घर बनवाया। घर की ता'मीर मुकम्मल होने के बा'द एक दिन वोह अपने घर के दरवाज़े पर खड़ा था कि ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ عَنْه का वहां से गुज़र हुवा तो उस ने अ़र्ज़ की : "ऐ अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ عَنْه ! ज़रा ठहर जाइये ! और मुझे येह बताइये कि मैं घर के दरवाज़े पर क्या लिखवाऊं ?" आप رَضِیَ اللهُ عَنْه ने फ़रमाया : लिखवाओ "घर वीरान होने के लिये होते हैं, औलाद फ़ौत होने के लिये और माल वुरसा के लिये जम्अ़ किया जाता है।" उस वक़्त वहां एक आ'राबी (या'नी दीहात का रहने वाला) भी मौजूद था। उस ने कहा : "शैख़ ! तुम ने कितनी बुरी बात कही है।" घर के मालिक ने आ'राबी से कहा : "तेरी हलाकत हो ! येह नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सह़ाबी ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ عَنْه हैं।" (تاریخ ابن عساکر، 67/374)

फ़रामीने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا

❀ जब तू शाम करे तो आने वाली सुब्ह़ का इन्तिज़ार मत कर और जब सुब्ह़ करे तो शाम का मुन्तज़िर न रह और ह़ालते सिह़्ह़त में बीमारी के लिये और ज़िन्दगी में मौत के लिये तय्यारी कर ले। (بخاری، 4/223، حدیث:6416)

❀ ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا फ़रमाते हैं : कोई शख़्स उस वक़्त तक कामिल आ़लिम नहीं हो सकता जब तक वोह अपने से बेहतर से ह़सद करना, अपने से कमतर को ह़क़ीर जानना और इ़ल्म के बदले माल त़लब करना तर्क न कर दे। (الکواکب الدریۃ، 1/166)

❀ इन्सान के आ'ज़ा में सब से ज़ियादा ज़बान इस बात की ह़क़दार है कि इसे (फ़ुज़ूल बातों से) पाक रखा जाए। (مصنف ابن ابی شیبہ، 6/237، حدیث:7)

❀ یُعَلَّمُ الصَّبِیُّ الصَّلَاۃَ اِذَا عَرَفَ یَمِیۡنَہٗ مِنۡ شِمَالِہٖ या'नी जब बच्चा दाएं और बाएं में फ़र्क़ करने लगे तो उसे नमाज़ की ता'लीम दी जाए। (مصنف ابن ابی شیبہ، 1/382، رقم:5)

❀ अगर मेरी उंगली शराब में पड़ जाए तो उसे अपने हाथ के साथ रखना मुझे गवारा नहीं होगा। (مصنف ابن ابی شیبہ، 5/509، حدیث:6)

❀ अच्छे कामों में एक दूसरे से मश्वरा किया करो लेकिन बुराई में मश्वरा न किया करो। (مصنف ابن ابی شیبہ، 8/176، حدیث:16)

❀ इन्सान दुन्या की कोई भी ने'मत पाता है तो **अल्लाह** पाक के हां उस के दरजात में कमी आ जाती है। अगर्चे वोह बारगाहे इलाही में कितना ही शरफ़ो इ़ज़्ज़त रखता हो। (مصنف ابن ابی شیبہ، 8/174، حدیث:2)

❀ कोई बन्दा उस वक़्त तक ह़क़ीक़ते ईमान तक नहीं पहुंच सकता जब तक कि लोग दीन पर उस की इस्तिक़ामत देख कर उसे बे वुक़ूफ़ न समझें। (مصنف لابن ابی شیبۃ، 8/175، حدیث:4)

❀ वोह शख़्स आ़लिम नहीं हो सकता जो अपने बड़ों से ह़सद करता हो, छोटों को ह़क़ीर समझता हो और इ़ल्म को दुन्या के ह़ुसूल का ज़रीआ़ बनाता हो। (حلیۃ الاولیاء، 1/379، حدیث:1067)

❀ जो किसी की पैरवी करना चाहता हो वोह अस्लाफ़ की पैरवी करे जो हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सह़ाबा हैं। येही इस उम्मत के बेहतरीन लोग हैं। इन के दिल नेकी व भलाई में सब लोगों से बढ़ कर हैं। इन का इ़ल्म सब से वसीअ़ और इन में बनावट व नुमाइश न थी। येह वोह नुफ़ूसे क़ुदसिय्या हैं कि जिन्हें **अल्लाह** पाक ने अपने मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सोह़बत और दीन की तब्लीग़ के लिये मुन्तख़ब फ़रमाया। लिहाज़ा तुम इन के अख़्लाक़ो आ़दात और इन के त़ौर त़रीक़ों पर चलो क्यूं कि वोह ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा, अह़मदे मुज्तबा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सह़ाबा हैं। रब्बे का'बा की क़सम! येही लोग हिदायत के सीधे रास्ते पर गामज़न थे। ऐ बन्दे! मह़ज़ अपने बदन की ह़द तक दुन्या से तअ़ल्लुक़ क़ाइम कर और अपने दिलो दिमाग़ को इस से दूर रख क्यूं कि तेरी नजात का दारो मदार तेरे अ़मल पर है। लिहाज़ा तू अभी से मौत की तय्यारी कर ताकि तेरा अन्जाम और ख़ातिमा अच्छा हो। (حلیۃ الاولیاء، 1/378، رقم:1065)

❀ ह़ज़रते क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी है कि ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से किसी ने पूछा : "क्या हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सह़ाबा رِضْوَانُ اللّٰہِ عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْنَ हंसा करते थे?" आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया : "जी हां! ह़ालां कि ईमान उन के दिलों में पहाड़ों से भी ज़ियादा क़वी और मज़बूत़ था।" (جامع معمر بن راشد مع المصنف لعبد الرزاق، 10/286، حدیث:20837)

❀ एक शख़्स ने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से पूछा : "जिस

त़रह़ لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللہ (या'नी इस्लाम) के बिग़ैर कोई अ़मल नफ़्अ़ नहीं देता तो क्या मुसल्मान को कोई अ़मल नुक़्सान भी नहीं पहुंचा सकता ?" आप رَضِیَ اللہُ عَنْہ ने फ़रमाया : (नेकियों वाली) ज़िन्दगी बसर कर और धोके में न रहना (कि मुसल्मान को कोई बुराई नुक़्सान नहीं पहुंचा सकती) ।

(جامع معمر بن راشد مع المصنف لعبد الرزاق، 10/258، حدیث:20720)

फ़रामीने ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللہُ عَنْہ

❀ इन्सान इस दुन्या में ज़िन्दा रह कर सिर्फ़ किसी परेशान कुन आफ़तो मुसीबत या किसी फ़ितने का इन्तिज़ार करता है ।

(کتاب الزھد لابن مبارک، ص3، حدیث:5)

❀ ह़ज़रते क़सामा बिन ज़ुहैर رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : एक मरतबा बसरा में ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللہُ عَنْہ ने हमें ख़ुत़्बा देते हुए इर्शाद फ़रमाया : "ऐ लोगो ! रोया करो और अगर रोना न आए तो रोने जैसी सूरत बना लिया करो क्यूं कि (ना फ़रमानियों के सबब जहन्नम में जाने वाले) जहन्नमी इतना रोएंगे कि रोते रोते उन के आंसू ख़त्म हो जाएंगे । बिल आख़िर वोह ख़ून के आंसू रोना शुरूअ़ कर देंगे और इस क़दर आंसू बहाएंगे कि अगर उन के आंसूओं में कश्तियां छोड़ी जाएं तो चलने लगें ।"

(کتاب الزھد لامام احمد، ص215، حدیث:1103)

❀ बेशक क़ियामत के दिन सूरज लोगों के सरों पर रह कर आग बरसा रहा होगा और उन के आ'माल उन के लिये साए का ज़रीआ़ बनेंगे या धूप ही में जलने देंगे । (مصنف ابن ابی شیبۃ، 8/203، حدیث:3)

फ़रमाने ह़ज़रते मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللہُ عَنْہ

❀ अहले जन्नत किसी चीज़ पर ह़सरत नहीं करेंगे सिवाए उस घड़ी के जो यादे इलाही से ग़फ़्लत में गुज़री । (احیاء العلوم، 1/392)

फ़रामीने ह़ज़रते अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ

❀ जो हंसते हुए जन्नत में जाना चाहता है उसे चाहिये कि अपनी ज़बान को हमेशा ज़िक्रुल्लाह से तर रखे। (طبقات الصوفیاء، 1/117)

❀ जो बन्दा कसरत से मौत को याद करता है उस की ख़ुशी और ह़सद में कमी आ जाती है। (الزواجر عن اقتراف الکبائر، 1/116)

❀ ईमान की सर बुलन्दी हुक्मे इलाही पर सब्र करना और तक़्दीर पर राज़ी रहना है। (احیاء العلوم، 5/67)

❀ इस बात से डरो कि मोमिनीन के दिल तुम से नफ़्रत करने लगें और तुम्हें इस का पता भी न हो। (کتاب الزھد لابی داؤد، ص205، حدیث:229)

❀ जब तक तुम नेक लोगों से मह़ब्बत रखोगे भलाई पर रहोगे और तुम्हारे बारे में जब कोई ह़क़ बात बयान की जाए तो उसे मान लिया करो कि ह़क़ को पहचानने वाला उस पर अ़मल करने वाले की त़रह़ होता है।

(شعب الایمان، 6/503، حدیث:9063)

फ़रामीने ह़ज़रते हुज़ैफ़ा बिन यमान رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ

❀ ह़ज़रते हुज़ैफ़ा बिन यमान رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया : फ़ितने के मक़ामात से बचो। अ़र्ज़ की गई कि वोह कौन से हैं ? फ़रमाया : हुक्मरानों के दरवाज़े। तुम में से कोई ह़ाकिम के दरवाज़े पर जाता है तो उस के झूट पर उस की तस्दीक़ करता और उस के बारे में वोह कहता है जो उस में नहीं होता। (احیاء العلوم، 2/177)

❀ दीन के गुनाहगार और ज़िन्दगी में लाचार व बदह़ाल बहुत से लोग सिर्फ़ अपनी सख़ावत की वज्ह से जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे।

(التذکرۃ الحمدونیۃ، 2/299)

फ़रामीने ह़ज़रते अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ

❀ क़ुरआने पाक की हर आयते मुबारका जन्नत का एक दरजा और तुम्हारे घरों का चराग़ है। (احیاء العلوم، 1/363)

❀ जिस ने क़ुरआन पढ़ा उस ने नुबुव्वत को अपने दोनों पहलूओं के दरमियान जम्अ़ कर लिया मगर येह कि उस की त़रफ़ वह़ी नहीं की जाती। (احیاء العلوم، 1/363)

❀ बात करना दवा की त़रह़ है, थोड़ी मिक़्दार में हो तो फ़ाएदेमन्द होगा और अगर ज़ियादा हो तो नुक़्सान देह साबित होगा। (حسن السمت فی الصمت، ص100)

फ़रामीने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا

❀ हर बद ज़बान का जन्नत में दाख़िला ह़राम है। (حلیۃ الاولیاء، 1/359، رقم:982)

❀ मोमिन के जिस्म में कोई उ़ज़्व ऐसा नहीं जो **अल्लाह** पाक को ज़बान से ज़ियादा पसन्दीदा हो, इसी के सबब **अल्लाह** पाक उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा और ग़ैर मुस्लिम के जिस्म में कोई उ़ज़्व ऐसा नहीं जो **अल्लाह** पाक को ज़बान से ज़ियादा ना पसन्द हो, इसी के सबब **अल्लाह** पाक उसे जहन्नम में दाख़िल फ़रमाएगा। (حلیۃ الاولیاء، 1/280)

फ़रामीने ह़ज़रते अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ

❀ जो जन्नत में जाना चाहता है उसे चाहिये कि दुन्यवी मालो ज़र में रग़बत न रखे। (حلیۃ الاولیاء، 1/219، رقم:542)

❀ दुआ़ की क़बूलिय्यत के लिये नेकी व भलाई की हैसिय्यत ऐसी है जैसी सालन में नमक की। (مصنف ابن ابی شیبہ، 7/40، حدیث:4)

❀ ह़ज़रते अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने ह़ज़रते सलमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से फ़रमाया : ऐ सलमा ! बादशाहों के दरवाज़ों पर मत जाओ क्यूं कि तुम्हें

उन की दुन्या में से कुछ नहीं मिलेगा लेकिन वोह इस से अफ़्ज़ल या'नी तुम्हारे दीन से ले लेंगे। (مصنف ابن ابی شیبہ 8/698، حدیث:79)

❀ 2 दिरहम वाले का ह़िसाब एक दिरहम वाले के ह़िसाब से सख़्त होगा (या'नी जितना माल ज़ियादा उतना वबाल ज़ियादा)।

(مصنف ابن ابی شیبہ، 8/183، حدیث:3)

❀ ह़ज़रते अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने का'बे के पास खड़े हो कर फ़रमाया : ऐ लोगो ! मैं जुन्दुब ग़िफ़ारी हूं। अपने शफ़्क़तो नसीह़त करने वाले भाई के पास जम्अ़ हो जाओ ! सब लोग जम्अ़ हो गए तो आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया : "जब तुम में से कोई सफ़र पर जाता तो क्या वोह ज़ादे राह (या'नी सफ़र में काम आने वाला ज़रूरी सामान) साथ नहीं लेता जिस से ज़रूरिय्यात पूरी हों और अपनी मन्ज़िल तक पहुंच सके ?" लोगों ने अ़र्ज़ की : "क्यूं नहीं !" फ़रमाया : "तो सुनो ! क़ियामत का सफ़र सब से त़वील है। इस के लिये ख़ूब ज़ादे राह तय्यार करो जो तुम्हारे काम आ सके।" ह़ाज़िरीन ने पूछा : "वोह क्या है जो इस में हमारे काम आए ?" फ़रमाया : "बड़े बड़े दुश्वार कामों से बचने के लिये ह़ज करो। रोज़े क़ियामत की गरमी व तपिश से ह़िफ़ाज़त के लिये सख़्त गरमी के दिनों में भी रोज़े रखो। क़ब्र की वह़्शतो घबराहट से नजात ह़ासिल करने के लिये रात की तारीकी में नमाज़ अदा किया करो। ह़िसाब के दिन की पेशी के लिये अच्छी बात कहो और बुरी से बाज़ रहो। क़ियामत की सख़्तियों से बचने के लिये अपना माल सदक़ा करो। दुन्या में सिर्फ़ दो क़िस्म की मह़फ़िल इख़्तियार करो : एक वोह जो त़लबे आख़िरत के लिये हो और दूसरी वोह जो त़लबे ह़लाल के लिये हो और इन के इ़लावा कोई

तीसरी मह़फ़िल इख़्तियार न करना कि उस में तुम्हारे लिये कोई नफ़्अ़ नहीं बल्कि वोह तुम्हारे लिये नुक़्सान देह साबित होगी। इसी त़रह़ अपने माल को भी दो ह़िस्सों में बांट लो : एक ह़िस्सा अहलो इ़याल पर ख़र्च करो और दूसरा राहे ख़ुदा में ख़र्च कर के अपनी आख़िरत के लिये ज़ख़ीरा कर लो। इन के इ़लावा कोई तीसरा ह़िस्सा मत बनाओ कि इस में सरासर नुक़्सान है, फ़ाएदा कुछ नहीं।'' इस के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने बुलन्द आवाज़ से फ़रमाया : ''लोगो ! ह़िर्स (से बचो कि इस) में तुम्हारे लिये हलाकत है क्यूं कि येह कभी ख़त्म नहीं होती और न ही तुम इसे पूरा कर सकते हो।'' (اخبار مکۃ للفاکھی،3/134، حدیث:1904-صفۃ الصفوۃ،1/301، الرقم:64)

❀ ह़ज़रते अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने ह़ज़रते अह़नफ़ बिन क़ैस رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ से फ़रमाया : जब तक अ़त़िय्या ख़ुशदिली से मिले ले लो और जब वोह तुम्हारे दीन की क़ीमत बन जाए तो तर्क कर दो। (احیاء العلوم،2/170)

फ़रामीने ह़ज़रते सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ

❀ दुन्या में लोगों का एक दूसरे पर ज़ुल्म करना क़ियामत के दिन तारीकियों का सबब है। (حلیۃ الاولیاء،1/260، رقم:640 ملخصا)

❀ **अल्लाह** पाक जब किसी को ज़लीलो रुस्वा या हलाक करने का इरादा फ़रमाता है तो उस से ह़या छीन लेता है। फिर तुम उस शख़्स को इस ह़ाल में पाओगे कि वोह लोगों से नफ़रत करता है और लोग उस से नफ़रत करते हैं। (مکارم الاخلاق، ص94، رقم:113)

❀ ह़ज़रते मैमून बिन मेहरान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ बयान करते हैं कि एक शख़्स ने ह़ज़रते सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : मुझे नसीह़त कीजिये। फ़रमाया : गुफ़्तगू मत करो। उस ने अ़र्ज़ की : जो लोगों के दरमियान रहता है उसे बातचीत किये बिग़ैर चारा नहीं।

फ़रमाया : अगर गुफ़्तगू करनी ही हो तो ह़क़ बात कहो या ख़ामोश रहो। (تاریخ ابن عساکر، 21/449)

❀ ह़ज़रते जा'फ़र बिन बुरक़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से मरवी है कि ह़ज़रते सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللهُ عَنْه ने फ़रमाया : मुझे 3 चीज़ें हंसाती और 3 चीज़ें रुलाती हैं। हंसाने वाली 3 चीज़ें येह हैं : तअ़ज्जुब है उस शख़्स पर जो दुन्या से उम्मीदें बांधता है ह़ालां कि मौत उस की तलाश में है और ह़ैरत है उस ग़ाफ़िल इन्सान पर जो ग़फ़्लत से बेदार नहीं होता और उस पर भी तअ़ज्जुब है जो मुंह खोल कर हंसता है ह़ालां कि उसे नहीं मा'लूम कि उस का रब उस से राज़ी है या नाराज़। रुलाने वाली 3 चीज़ें येह हैं : हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की जुदाई, नज़्अ़ की तकालीफ़ का पेश आना और बारगाहे इलाही में ह़ाज़िर होना जब कि मुझे मा'लूम नहीं कि मैं जहन्नम की त़रफ़ हांका जाऊंगा या जन्नत में जगह पाऊंगा। (کتاب الزھد للامام احمد، حدیث:837، ص176)

❀ ह़ज़रते त़ारिक़ बिन शिहाब رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللهُ عَنْه के पास रात गुज़ारी ताकि उन की इ़बादत को मुलाह़ज़ा कर सकूं। चुनान्चे जब रात का पिछला पहर हुवा तो आप رَضِیَ اللهُ عَنْه ने उठ कर नमाज़ अदा की गोया कि मैं जो समझता था (कि आप رَضِیَ اللهُ عَنْه सारी रात इ़बादत करते हैं) वैसा देखने में न आया। मैं ने येह बात आप رَضِیَ اللهُ عَنْه से बयान की तो फ़रमाया : "इन पांच फ़र्ज़ नमाज़ों की पाबन्दी करो तो येह दरमियान में होने वाले गुनाहों का कफ़्फ़ारा बन जाती हैं जब तक गुनाहे कबीरा का इरतिकाब न किया जाए।" मज़ीद फ़रमाया कि "लोग जब इ़शा की नमाज़ अदा कर लेते हैं तो तीन क़िस्म के हो जाते हैं : ﴿1﴾ वोह लोग जिन के लिये येह रात वबाल बन जाती है और वोह

इस से कोई फ़ाएदा नहीं उठा पाते ﴿2﴾ बा'ज़ ख़ुश नसीबों के लिये भलाई का सबब बन कर आती है और उन्हें वबाल से बचाती है और ﴿3﴾ बा'ज़ नादानों के लिये येह रात न तो फ़ाएदे मन्द साबित होती है और न ही वबाल बनती है। जिन के लिये वबाल बनती है और फ़ाएदे से ख़ाली होती है येह वोह हैं जो रात की तारीकी और लोगों की ग़फ़्लत को ग़नीमत जान कर दिलेरी से गुनाहों में रात बसर करते हैं और जो रात की तारीकी और लोगों की ग़फ़्लत को ग़नीमत समझ कर रात में उठ कर इबादत करते हैं उन के लिये येह रात फ़ाएदे मन्द है वबाल नहीं और जो नमाज़ पढ़ कर सो जाते हैं उन के लिये न फ़ाएदे मन्द है और न ही वबाल। लिहाज़ा तुम ग़फ़्लत से बचो, **अल्लाह** पाक की इबादत का क़स्द करो और इस पर हमेशगी इख़्तियार करो।'' (مصنف عبد الرزاق، 2/416، حدیث:4749)

❀ हर शख़्स का एक बातिन होता है और एक ज़ाहिर, जो अपने बातिन को संवार लेता है **अल्लाह** पाक उस के ज़ाहिर को संवार देता है और जो अपने बातिन को बिगाड़ लेता है **अल्लाह** पाक उस के ज़ाहिर को भी बिगाड़ देता है। (کتاب الزھد لابن المبارک وبلیہ کتاب الرقائق، حدیث:72، ص17)

❀ बेशक इल्म बहुत ज़ियादा और उम्र बहुत थोड़ी है लिहाज़ा दीन का ज़रूरी इल्म हासिल करो और इस के मा सिवा (या'नी इस के इलावा चीज़ों) को छोड़ दो क्यूं कि इस पर तुम्हारी मदद नहीं की जाएगी।

(حلیۃ الاولیاء، 1/246، رقم:606)

❀ हज़रते सलमान رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से ऐसे गुनाह के बारे में पूछा गया जिस की मौजूदगी में कोई नेकी फ़ाएदा नहीं देती तो आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने इर्शाद फ़रमाया : ''वोह गुनाह तकब्बुर है।'' (الزواجر عن اقتراف الکبائر، 1/149)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد